इकाई 1 सौन्दर्य की परिभाषा व सामान्य परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 सौन्दर्य की परिभाषा

1.3 सौन्दर्य का सामान्य परिचय

1.4 सारांश

1.5 शब्दावली

1.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप–

- पाश्चात्य एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्य की परिभाषा का अध्ययन कर पायेंगे।
- वैदिक काल में सौन्दर्य के स्वरूप का अध्ययन कर पायेंगे।
- सौन्दर्य का सामान्य परिचय के अन्तर्गत रामायण काल में इसके स्वरूप का अध्ययन कर पायेंगे।
- सौन्दर्य का सामान्य परिचय के अन्तर्गत महाभारत काल में सौन्दर्य के स्वरूप का अध्ययन कर पायेंगे।
- सौन्दर्य का सामान्य परिचय के अन्तर्गत भक्ति काल में इसके स्वरूप का अध्ययन कर पायेंगे।
- इसमें प्रयुक्त तकनीकि शब्दावली के बारें में जान सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

सौन्दर्यशास्त्र संवेदनात्मक–भावात्मक गुण–धर्म और मूल्यों का अध्ययन है। कला, संस्कृति और प्रकृति का प्रति अंकन ही सौन्दर्यशास्त्र है। सौन्दर्यशास्त्र वह शास्त्र है जिसमें कलात्मक कृतियों, रचनाओं आदि से अभिव्यक्त होने वाला अथवा उसमें निहित रहने वाले सौन्दर्य का तात्त्विक, दार्शनिक और मार्मिक विवेचन होता है। किसी सुन्दर वस्तु को देखकर या सुन्दर वस्तु के बारें में सुनकर हमारे मन में जो आनन्ददायिनी अनुभूति होती है, वहीं सौन्दर्य है। उसी सौन्दर्य को किसी के जीवन की अन्यान्य अनुभूतियों के साथ उसका समन्वय स्थापित करना इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य होता है। खण्ड–1 की इकाई–1 में सौन्दर्य की परिभाषाओं तथा विभिन्न काल में सौन्दर्य के स्वरूप को स्पष्ट किया जायेगा।

सौन्दर्यशास्त्र संवेदनात्मक–भावात्मक गुण–धर्म और मूल्यों का अध्ययन है। कला, संस्कृति और प्रकृति का प्रति अंकन ही सौन्दर्यशास्त्र है। सौन्दर्यशास्त्र वह शास्त्र है जिसमें कलात्मक कृतियों, रचनाओं आदि से अभिव्यक्त होने वाला अथवा उसमें निहित

रहने वाले सौन्दर्य का तात्विक, दार्शनिक और मार्मिक विवेचन होता है। किसी सुन्दर वस्तु को देखकर या सुन्दर वस्तु के बारें में सुनकर हमारे मन में जो आनन्ददायिनी अनुभूति होती है वहीं सौन्दर्य है। उसी सौन्दर्य को किसी के जीवन की अन्यान्य अनुभूतियों के साथ उसका समन्वय स्थापित करना इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य होता है। सौन्दर्य वह गुण या गुणों का संश्लेश है जो इन्द्रियों को तीव्र आनन्द प्रदान करता है प्रधानतः चाक्षुश आनन्द तथा अन्य इन्द्रियों तथा बौद्धिक भावनाओं को आनन्द प्रदान करता है। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के कारण आज मनुष्य असम्भव को सम्भव करने में समर्थ हो पाता है और हर प्रकार के सुविधा का भागी बन गया है। आज विज्ञान प्रकृति के नियम के छोड़कर एक जीव कोश से करोड़ों कोश वाला प्राणी बना सकता है। यह सब मनुष्य की बुद्धि का कमाल है, फिर भी विज्ञान ने मनुष्य को लाभ से ज्यादा नुकसान ही पहुँचाया है क्योंकि बुद्धि पर ज्यादा बल देने के कारण मनुष्य ह्रदय पक्ष से छूटता गया है और जिसके कारण आज सम्बन्धों में प्रतिकूलता आ गयी है। आज वह यंत्र से प्यार कर सकता है पर वस्तु जगत, पक्षी जगत, मनुष्य जगत से नहीं। मनुष्य की बुद्धि ने उसे यांत्रिक बना दिया है। वह संसार से सम्बन्ध जोड़ने के लिए नाकामयाब हो रहा है। किन्तु सौन्दर्य की खोज के लिए मनुष्य को यंत्र से प्यार न करते हुए संसार के सम्पूर्ण प्राणियों से प्रेम करना होगा। साधारणतः हम सौन्दर्य को वस्तु और प्राणी के बाहरी रूप का विषय मान लेते है किन्तु इसके ब्राह्य और आन्तरिक रूपों में सौन्दर्य के अवस्थान को लेकर पुराने जमाने से लेकर आजतक बहुत सारे चिन्तकों ने इस पर अपने मत प्रकट किए हैं। इस इकाई में सौन्दर्य की परिभाषाओं तथा विभिन्न काल में सौन्दर्य के स्वरूप को स्पष्ट किया जायेगा।

1.2 सौन्दर्य की परिभाषा

सौन्दर्य स्वयं सुधा है और हर क्षण परिवर्तित होता रहता है। मनुष्य इस जगत के कण–कण में सौन्दर्य की मनोहारी छवि को विस्मय विमुग्ध होकर निहरता रहता है। सौन्दर्य एक ऐसा दिव्य तत्व है जो मनुष्य की चेतना को जन्म से ही आकर्षित करने लगता है। सौन्दर्य चिन्तन में रूचि भेद के कारण अपना–अपना दृष्टिकोण और अपनी–अपनी सूझ की विविधता के कारण सौन्दर्य की परिभाषाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है। आचार्य शंकुक के मतानुसार नायक में रस की अवस्थिति और नट में रस की अनुभूति मानी जाती है। प्रमाता (सामाजिक, द्रष्टा या पाठक) काव्यगत पात्रों एवं नटों को अभिन्न मान लेता है और नटों में ही रस की स्थिति का अनुमान कर लेता है। परिणामस्वरुप नटों की तरह ही वह भी रसानन्द प्राप्त करता है। यही रसानन्द ही शंकुक का "सौन्दर्यानन्द है।"

सौन्दर्यशास्त्र व्यापक रूप में सौन्दय का शास्त्र है, जिसमें उपयोगी और ललित सभी कलाओं संगीत, साहित्य, रंगमंच, नृत्य, फिल्म, पेटिंग, वास्तु, मूर्ति आदि के साथ–साथ प्रकृति, मानव–जीवन और जगत के प्रत्येक क्षेत्र में उपस्थित आनुभूतिक एवं अभिव्यक्तिक सौन्दर्य का अध्ययन होता है। सौन्दर्यशास्त्र का यह व्यापक स्वरूप वस्तुतः सौन्दर्य की व्यापकता के ही कारण है।

पाश्चात्य परिभाषा–

प्लेटो के अनुसार– सुन्दर, शिव और सत्य एक है। सुन्दर 'परम' है और पूर्ण है तथा सुन्दर के लिए नैतिक होना आवश्यक है।

अरस्तू के अनुसार–अरस्तू का प्रसिद्ध ग्रन्थ पोयटिक्स है। इनका मानना है कि सौन्दर्य न तो अतिशय विशाल होता है और न ही अतिशय लघु होता है बल्कि दोनों के मध्य का औसत होता है। उन्होंने स्पष्टतः लिखा है कि सौन्दर्य का दर्शन नेत्रों से

होता है।

प्लूटार्क के अनुसार–सौन्दर्य एक प्रकार की कलात्मक कुशलता है।

बाउमगार्तेन के अनुसार– प्रकृति सौन्दर्य का चरम प्रतिमान है इसलिए प्रकृति का अनुकरण ही सौन्दर्य–सृजन है। सौन्दर्यशास्त्र ऐन्द्रिय ज्ञान का विज्ञान है। ऐन्द्रीय माध्यम से पूर्णत्व की अनुभूति सौन्दर्य है।

भारतीय परिभाषा–

भारतीय विद्वानों और कवियों की सौन्दर्य के विष्य में मान्यतायें इस प्रकार है। महाकवि माघ ने कहा है कि–**'क्षणै–क्षणै यन्नवतामुपैती तदैव रूपं रमणीयतायाः'** जो क्षण–क्षण नवीनता प्राप्त करें, वही रमणीयता का रूप है। श्रीमद् रूपगोस्वामी ने सौन्दर्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि–**'भवेत्यसौन्दर्यमंगानां सन्निवेशो यथोचितम्।'** इसके पश्चात् कालिदास के अनुसार–**'प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारूता।'** पंडितराज जगन्नाथ ने अपने ग्रंथ रसगंगाधर में अवश्य ही रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य की संज्ञा दी थी, किन्तु वह भी रमणीयता के स्वरूप के सम्बन्ध में कोई गम्भीर विचार प्रस्तुत न कर सके। इस वर्ग के विचारकों का मत है कि काव्य एक ललित कला है, अतः काव्यशास्त्र भी सौन्दर्यशास्त्र की एक शाखा है। दोनों के पार्थक्य को स्पष्ट करते हुए डॉ. बलदेव उपाध्याय कहते है कि–सौन्दर्य को अत्यन्त महत्वशाली मानने पर भी हमारा शास्त्र 'सौन्दर्यशास्त्र' के नाम से अभिहित होते–होते बच गया। ऐसा होने पर यह पाश्चात्यों के 'एस्थेटिक्स' का पर्यायवाची बन गया होता। परन्तु सौन्दर्यशास्त्र का क्षेत्र साहित्य शास्त्र के क्षेत्र से कहीं अधिक व्यापक और विशाल है। साहित्यशास्त्र तो केवल शब्द के माध्यम द्वारा निर्मित कला को ही द्योतित करता है, परन्तु सौन्दर्यशास्त्र ललित कलाओं जैसे वास्तु, चित्र तथा संगीत आदि में निर्दिष्ट चारुत्व को भी अपने क्षेत्र के अन्तर्गत करता है। अतः दोनों का पार्थक्य मानना न्यायसंगत ही है।

पाश्चात्य दृष्टिकोण से काव्य एक ललित कला है और उसका अन्य ललित कलाओं से व्यापक एवं गहन सम्बन्ध है जबकि भारतीय विचारक काव्य को कला नहीं स्वीकार करते थे।

भारतीय काव्यशास्त्र के अध्येताओं में अलंकारवादी आचार्यों ने काव्य में सौन्दर्योत्पादन के सारे उपकरणों को अलंकार माना है–**सौन्दर्यमलङ्कारः'** अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भामह का कहना है कि जिस प्रकार कोई नारी कितनी भी सौन्दर्ययुक्त क्यों न हो, यदि अलंकार विहीन है तो शोभा सम्पन्न नहीं कही जा सकती। इसी प्रकार काव्य में चाहें कितने ही गुण क्यों न हो, यदि उसमें अलंकारों की योजना नहीं है तो वह आल्हाद्कारी नहीं हो सकता–**'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्'** आचार्य दण्डी ने अलंकारों को शोभा का कारण बताते हुए कहा है कि–**काव्यशोभाकरान् धर्मानलङ्कारान् प्रचक्षते।** जयदेव चन्द्रालोककार जयदेव पियूषवर्ष के अनुसार यदि कोई काव्य को अलंकार रहित मानता है तो अपने को पंडित मानने वाला व्यक्ति अग्नि को उष्णताहीन क्यों नहीं कहता–**'अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती। असो न मन्यते कास्मादनुष्णमनलङ्कृती।** आचार्य वामन ने गुणों को शोभा के कारण और अलंकारों को शोभा को अतिशयता देने वाला या बढ़ाने वाला माना है–**काव्यशोभायाः कर्त्तारो धर्माः गुणाः। तदतिशयहेतवस्त्वलंकाराः।** आचार्य विश्वनाथ ने भी अलंकारों को शब्द और अर्थ के अस्थिर धर्म कहा है और

उनको कवच आदि की भाँति शोभा बढ़ाने वाले तथा रस के उपकारक माना है–**शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः। रसादीनुपकुर्वन्तो अलंकारास्ते अंगदादिवत्।**

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि जहाँ भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय तत्त्व में प्रामुख्येन काव्यात्मक तत्व यथा रस, अलंकार, ध्वनि, रीति, गुण एवं औचित्य, कलातत्व ललित कलाएं–नाट्य, चित्र, संगीत, वास्तु, मूर्तिकला, दर्शनतत्व, कल्पना, बिम्ब, प्रतीक कलागत सौन्दर्य आदि दोनों की गणना होती है। वहीं पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र में भी कल्पना, कला, सौन्दर्य (लौकिक एवं अलौकिक) इन्द्रिय सुख, स्वच्छन्दता, विज्ञान तत्व, औदात्य आदि की गणना होती है। इन्ही परिभाषाओं से यह भी स्पष्ट है कि सौन्दर्यशास्त्र के अन्तर्गत प्रधानतः तीन प्रकार के सौन्दर्य पर विचार किया जाता है–रूप सौन्दर्य, रंग सौन्दर्य एवं अभिव्यक्ति का सौन्दर्य।

1.3 सौन्दर्य का सामान्य परिचय

भारत में वैदिक काल से लेकर आज तक सौन्दर्य का विवेचन होता आ रहा है। सौन्दर्य के स्वरूप विवेचन के क्रम में इस पर बहुत सारे सवाल उठाए गए हैं, जैसे क्या शरीर का गुण सौन्दर्य है? क्या उसका संबंध चेतना से है? क्या सौन्दर्य आत्मनिष्ठ है या वस्तुनिष्ठ? क्या सौन्दर्य इन दोनों का सामूहित रूप है? सौन्दर्य के सही स्वरूप तक पहुँचने के लिए हमें विद्वानों के विचारों से होकर गुजरना होगा।

वैदिक काल में सौन्दर्य–

भारतीय परम्परा में सौन्दर्य का विशेष विवेचन वैदिक काल से चला आ रहा है। वैदिक सौन्दर्य दृष्टि आध्यात्मिक रही है। इसमें सौन्दर्य की अनुभूति को आनन्द की अनुभूति के रूप में देखा गया है। इस आनन्द का उदय मनुष्य में कब हुआ यह कहना कठिन है। शायद यह मनुष्य को जन्म से प्राप्त है। मानव उस आनन्दमय ब्रह्म का अंश होने के कारण उसमें भी आनन्द का गुण प्राप्त होता है। मनुष्य में इस आनन्द की अनुभूति, सौन्दर्य के अनुभूति का पर्याय है। वेद में सौन्दर्य शब्द के बदले आनंद, मोह आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। वेद के अनुसार 'मानव शरीर में अमृत से आवृत्त ब्रह्मपुरी या ब्रह्म की अपराजित हिरण्यपुरी है। यही हिरण्यपुरी आनंद का स्रोत है। वेदकालीन मनुष्य विश्व जीवन में वनस्पति, पर्वत, सागर, वायु, सूर्य सभी में एक दिव्यता की झलक देखता था। उसके लिए सूर्य केवल आग का गोला नहीं था, वह समस्त संसार का मंगल करने वाला एक दिव्य शक्ति था। इस प्रकार समस्त वस्तु को दिव्य मानकर उसकी पूजा करता था अपने को उस विराट विश्व के पीछे रहने वाला दिव्य सत्ता के सामने समर्पित कर देता था और उसी से उसे आनन्द की अनुभूति होती थी। इसी अनुभूति में ही सौन्दर्य का प्रकटीकरण होता था। वेद कालीन सौन्दर्य अन्तःकरण का सौन्दर्य था, जिसमें आध्यात्मिकता निहित थी।

रामायण में सौन्दर्य का स्वरूप–

समय संसार का एकमात्र सत्य है, जो हमेशा गतिमान है। समय की इस गतिमानता के साथ परिवेश भी बदलता है और परिवेश के साथ–साथ मनुष्य में भी बदलाव आता है और उसके सौन्दर्य चेतना में भी। वैदिक काल के मनुष्य की सौन्दर्य–चेतना और रामायण काल के मनुष्य की सौन्दर्य–चेतना में बहुत अंतर है। वेदकालीन मनुष्य का मन जहाँ प्रकृति के दिव्य और आध्यात्मिक रूपों में रमण करता था, वहाँ रामायण युग

में सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक समस्याओं से जूझता हुआ दिखाई देता है। लोगों के सामने सत्य–असत्य, नैतिक–अनैतिक आदि कितनी समस्याएँ उत्पन्न हो गई थी। इन समस्याओं से टकराता हुआ वह हार रहा था। इनको एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो इनकी समस्याओं का समाधान कर सकता था। उन समस्याओं में सामंजस्य बिठा सकता था। राम का जीवन इन समस्याओं के समाधान का प्रयास था। अतः मानव ने सारी की सारी सौन्दर्य की आभा राम में ही दिखी। यहाँ वेदकालीन दिव्य–सौन्दर्य, मानव शरीर के सौन्दर्य में बदल गया। वैदिक युग की अनुभूति को दिव्य सौन्दर्य कहें तो रामायण काल की अनुभूति को मानव सौन्दर्य कह सकते है। मानव के आंतरिक सौन्दर्य पर ज्यादा बल दिया गया। अतः सौन्दर्य का वर्णन करते हुए रामायणकार ने सौन्दर्य शब्द के बदले रमणीय, शोभन, चारु आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

शोभिताम शतश्चित्राम.....
दर्शनम् चित्रकूटस्य मंदाकिनाश्च शोभने।
अधिक पुरवासाच्च मनये च तवदर्शनात्।।

हे शोभने तुम्हारे साहचर्य के कारण चित्रकूट और मंदाकिनी का दर्शन अयोध्या निवास से अधिक सुखकर प्रतीत होता है।

इसके साथ–साथ रामायण की सौन्दर्य चेतना में शोक का भी स्थान है। राम शोक में डूबे रहकर हर विसंगति का विरोध करते हैं। राम की करुणा और शोक उदात्त होने के कारण वह आनंद की अनुभूति उत्पन्न करती है। करुणा में भी सौन्दर्य की आभा फूटती है। आनन्द की अनुभूति में राम का उदात्त शोक उसका तत्त्व है और सौन्दर्य में करुणा को उचित स्थान देना रामायण का महत्व है।

महाभारत में सौन्दर्य स्वरूप–

महाभारत का सौन्दर्य कर्म और संघर्ष का सौन्दर्य है, जिसमें शांत रस की एक अपूर्व धारा प्रवाहित रही है। महाभारत काल में भोग की अनंत लालसा, ऐश्वर्य का मद एक और कौरवों में है तो दूसरी ओर पांडवों के पास नीति, धर्म का मर्यादा का बंधन है। कौरव के पास भूख की लालसा, ऐश्वर्य का मद इसलिए था कि उन्हे संसार की विराटता का ज्ञान न था, जो ज्ञान अर्जुन को प्राप्त था। संसार का रहस्य और अनंतता का ज्ञान होने के बाद व्यक्तिगत सुख–दुःख, माया–मोह, जय–पराजय आदि सब तुच्छ लगता है। जीवन में विराट दृष्टि से मोह दूर हो जाता है, आँखे उज्ज्वल और तेज युक्त, गति में वीरता और हृदय में एक अद्‌भुत प्रसाद का आविर्भाव होता है। व्यास ने इस गंभीर अनुभव को शांति कहा है। इस शांतता के अनुभव के बाद वह वैरागी बन जाता है, फिर वह संघर्ष करता रहता है, कर्म करता रहता है और फल की आशा नहीं रखता। कृष्ण ने गीता में कहा है–**'कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषुकदाचन।'** यहाँ वैरागी होने का मतलब संसार को छोड़कर पर्वत शिखर एवं वनों में रहना नहीं है। सांसारिक जीवन में रहकर संघर्ष करते हुए वैरागी होना और शांति का अनुभव करना है, जिसमें से सौन्दर्य की एक अद्‌भुत आभा फूटती है।

भक्ति साहित्य में सौन्दर्य–

भक्ति साहित्य का सौन्दर्य प्रपत्ति, शरणागति, आत्मसमर्पण का सौन्दर्य है। वेद में

परोक्ष सत्ता के जो दिव्य सौन्दर्य का वर्णन किया गया था वह अगोचर था। पर भक्ति काल में इस सत्ता को प्रत्यक्ष रूप दे दिया गया और उसमें सारा का सारा दिव्य सौन्दर्य देखा गया।

बोध प्रश्न–1

क) निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही (√) का चिन्ह लगाइयें।

i) वेद में सौन्दर्य शब्द के बदले किन शब्दों का प्रयोग किया गया है। (आनन्द, मोह/ईर्ष्या, जलन)

ii) महाभारत का सौन्दर्य कैसा सौन्दर्य है? (कर्म और संघर्ष का सौन्दर्य/धर्म और भक्ति का सौन्दर्य)

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i) भक्ति साहित्य का सौन्दर्य.....है (शरणागत/अभिमान)

ii) भक्ति काल में .....सौन्दर्य देखा गया है। (दिव्य/अदिव्य)

बोध प्रश्न–2

क. रामायण काल में सौन्दर्य के सामान्य स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ख. महाभारत काल में सौन्दर्य के सामान्य स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

सौन्दर्य शब्द के परिभाषा एवं स्वरूप पर विस्तृत विचार कीजिए।

1.4 सारांश

सौन्दर्य के सन्दर्भ में चाहे भारत के विद्वान् हो या पाश्चात्य के विद्वान् सभी ने भाषा की थोड़ी सी हेर–फेर से इसको शुद्ध चित्त, दिव्य चित्त या आत्म चैतन्य में देखा है, जो परमात्मा स्वरूप है। सभी ने बाह्य या रूपगत सौन्दर्य से ज्यादा आत्मगत सौन्दर्य को श्रेष्ठ माना है। जब मनुष्य अपना चित्त परमात्मा से जोड़ता है तब उसे सौन्दर्य की अनुभूति होती है और फिर वह चिर आनन्द के सागर में गोते लगाता रहता है। इस इकाई में पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि एवं भारतीय विद्वानों की दृष्टि में सौन्दर्य की

परिभाषा तथा सौन्दर्य के सामान्य विचार हेतु वैदिक काल से लेकर रामायण महाभारत तथा आधुनिक काल तक के सभी विचारकों के मत को प्रकट किया गया है।

1.5 शब्दावली

रमणीयता – शोभा

अलंकार – सौन्दर्य

चारुता – शोभा

क्षणे–क्षणे – प्रत्येक पल

सौन्दर्य – अलंकार

लालसा – लालच

भोग – सुख

1.6 कुछ उपयोगी पुस्तके

- अभिनवभारती के तीन अध्याय, अभिनवगुप्त, सम्पा. नगेन्द्र, हिन्दी विभाग दि.वि. दिल्ली प्र.स. 1960
- औचित्यविचारचर्चा, क्षेमेन्द्र व्याख्या. व्रजमोहन झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1982
- काव्यप्रकाश मम्मट, सम्पा. एवं व्याख्या, विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी
- काव्यादर्श, दण्डी, सम्पा. एवं व्याख्या. डा. क्षेमेन्द्रकुमार गुप्त, मेहर चन्द्र लक्ष्मणदास, दिल्ली,1973
- काव्यालंकार भामह, सम्पा. एवं व्याख्या देवेन्द्रनाथ शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा–परिषद् पटना, 1985
- काव्यालंकारसूत्रवृत्ति, वामन, सम्पा. एवं व्याख्या. डा. वेचन झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी,
- काव्यानुशासन, हेमचन्द्र, सम्पा. एवं व्याख्या डा. रामानन्द शर्मा, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2000
- ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन, विश्वेश्वरकविचन्द्र सिद्धान्त शिरोमणि, ज्ञानमण्डल लि. वाराणसी, 1998
- नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, बटुकनाथ शर्मा एवं बलदेव उपाध्याय चौ.सं.संस्थान, वाराणसी, 1980
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् एक अध्ययन , काशीनाथ द्विवेदी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
- ध्वन्यालोक लोचन अभिनवगुप्त, ध्वन्यालोक की टीका, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई 1911
- वक्रोक्तिजीवितम्, कुन्तक, राधेश्याम मिश्र, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2007

- व्यक्तिविवेक, महिमभट्ट, रेवाप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी, 1987
- सरस्वतीकण्ठाभरण, भोज, कामेश्वरनाथ मिश्र, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी 1979
- साहित्यदर्पण, विश्वनाथ, व्याख्याकार डा. सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1976
- भारतीय साहित्यशास्त्र भाग 1, 2 बलदेव उपाध्याय, भा. व. उ. प्रसाद परिषद्, काशी वि. सं. 2007
- भारतीय सौन्दर्यदर्शन, ब्रजमोहन चतुर्वेदी, मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी, मध्यप्रदेश, 1998
- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, बलदेव उपाध्याय, अष्टम खण्ड काव्यशास्त्र, उ.प्र.सं.सं,लखनऊ,
- कालिदास ग्रन्थावली, सीताराम चतुर्वेदी, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, 1960
- अभिज्ञान शाकुन्तलम्, कपिलदेव द्विवेदी, साहित्य संस्थान इलाहाबाद

ENGLISH REFERENCE

1) B.M.Chatturvedi, **Some unexplored aspects of the Rasa Theory,** vidyanidhi Prakashan, ed.1906
2) S.K De, **History of Sanskrit Poetics.**., Firma KLM PVT Ltd.Calcutta,1976.
3) Raniero Gnoli, **The Aesthetic experience according to Abhinavagupta;** Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi, 1968
4) P.V Kane, **History of Sanskrit Poetics**,MLBD,Delhi,f.ed. 1961
5) A.B Keith, **History of Sanskrit literature**, oxford, 1928
6) V.Raghvan, **The Number of Rasas,** University of Madras, 1949, Adyar Library Adyar,1940
7) V.Raghvan,**Some Concepts of Alankar Shastra**, Adyar Library, Adyar, 1942

1.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

क) (i) आनन्द, मोह (ii) कर्म और संघर्ष का सौन्दर्य

ख) (i) शरणागत (ii) दिव्य

बोध प्रश्न–2

क) रामायण में सौन्दर्य का स्वरूप– समय संसार का एकमात्र सत्य है, जो हमेशा गतिमान है। समय की इस गतिमानता के साथ परिवेश भी बदलता है और परिवेश के साथ–साथ मनुष्य में भी बदलाव आता है और उसके सौन्दर्य चेतना में

भी। वैदिक काल के मनुष्य की सौन्दर्य–चेतना और रामायण काल के मनुष्य की सौन्दर्य–चेतना में बहुत अंतर है। वेदकालीन मनुष्य का मन जहाँ प्रकृति के दिव्य और आध्यात्मिक रूपों में रमण करता था, वहाँ रामायण युग में सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक समस्याओं से जूझता हुआ दिखाई देता है। लोगों के सामने सत्य–असत्य, नैतिक–अनैतिक आदि कितनी समस्याएँ उत्पन्न हो गई थी। इन समस्याओं से टकराता हुआ वह हार रहा था। इनको एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो इनकी समस्याओं का समाधान कर सकता था। उन समस्याओं में सामंजस्य बिठा सकता था। राम का जीवन इन समस्याओं के समाधान का प्रयास था। अतः मानव ने सारी की सारी सौन्दर्य की आभा राम में ही दिखी। यहाँ वेदकालीन दिव्य–सौन्दर्य, मानव शरीर के सौन्दर्य में बदल गया। वैदिक युग की अनुभूति को दिव्य सौन्दर्य कहें तो रामायण काल की अनुभूति को मानव सौन्दर्य कह सकते है। मानव के आंतरिक सौन्दर्य पर ज्यादा बल दिया गया। अतः सौन्दर्य का वर्णन करते हुए रामायणकार ने सौन्दर्य शब्द के बदले रमणीय, शोभन, चारु आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

शोभिताम शतश्चित्राम.....
दर्शनम् चित्रकूटस्य मंदाकिनाश्च शोभने।
अधिक पुरवासाच्च मनये च तवदर्शनात्।।

हे शोभने तुम्हारे सहचर्य के कारण चित्रकूट और मंदाकिनी का दर्शन अयोध्या निवास से अधिक सुखकर प्रतीत होता है।

इसके साथ–साथ रामायण की सौन्दर्य चेतना में शोक का भी स्थान है। राम शोक में डूबे रहकर हर विसंगति का विरोध करते हैं। राम की करुणा और शोक उदात्त होने के कारण वह आनंद की अनुभूति उत्पन्न करती है। करुणा में भी सौन्दर्य की आभा फूटती है। आनन्द की अनुभूति में राम का उदात्त शोक उसका तत्त्व है और सौन्दर्य में करुणा को उचित स्थान देना रामायण का महत्व है।

ख) महाभारत में सौन्दर्य का स्वरूप–महाभारत का सौन्दर्य कर्म और संघर्ष का सौन्दर्य है, जिसमें शांत रस की एक अपूर्व धारा प्रवाहित रही है। महाभारत काल में भोग की अनंत लालसा, ऐश्वर्य का मद एक और कौरवों में है तो दूसरी ओर पांडवों के पास नीति, धर्म का मर्यादा का बंधन है। कौरव के पास भूख की लालसा, ऐश्वर्य का मद इसलिए था कि उन्हे संसार की विराटता का ज्ञान न था, जो ज्ञान अर्जुन को प्राप्त था। संसार का रहस्य और अनंतता का ज्ञान होने के बाद व्यक्तिगत सुख–दुख, माया–मोह, जय–पराजय आदि सब तुच्छ लगता है। जीवन में विराट दृष्टि से मोह दूर हो जाता है, आँखे उज्ज्वल और तेज युक्त, गति में वीरता और हृदय में एक अद्‌भुत प्रसाद का आविर्भाव होता है। व्यास ने इस गंभीर अनुभव को शांति कहा है। इस शांतता के अनुभव के बाद वह वैरागी बन जाता है, फिर वह संघर्ष करता रहता है, कर्म करता रहता है और फल की आशा नहीं रखता। कृष्ण ने गीता में कहा है–**'कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषुकदाचन।'** यहाँ वैरागी होने का मतलब संसार को छोड़कर पर्वत शिखर एवं वनों में रहना नहीं है। सांसारिक जीवन में रहकर संघर्ष करते हुए वैरागी होना और शांति का अनुभव करना है, जिसमें से सौन्दर्य की एक अद्‌भुत आभा फूटती है।

अभ्यास प्रश्न–

इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY